चित्रःगूगल से साभार

धुआँ हो जाऊँगा

कुछ नहीं मुमकिन जहाँ सबकुछ वहाँ हो जाऊँगा।
अपनी ही आवाज़ में जब ख़ुद बयाँ हो जाऊँगा।

मेरे ऐबों से भी महकेगी हुनर की रौशनी,
क्या समझते हो,क्या यूँ ही रायगाँ हो जाऊँगा।

इश्क़ में कैसे सुहागिन होगी क़ुदरत देखना,
जब भी अपने आप पर मैं मेहरबाँ हो जाऊँगा।

उम्रभर मैंने तराशा है उजालों का बदन,
सिलसिला ज़ारी रहेगा मैं धुआँ हो जाऊँगा।

जिस्म का अपना सफ़र है रूह की परवाज़ कुछ,
क्या ख़बर कि कौन सा, मैं आसमाँ हो जाऊँगा।

क्या पता देखा है किसने मेरे अन्दर झाँककर,
क्या ख़बर मैं किसके चेहरे से अयाँ हो जाऊँगा।

बोझ तक़दीरों का सबकी कुछ तो कम हो जायेगा,
मैं हक़ीक़त से जो अपनी दास्ताँ हो जाऊँगा।

डॉ कौशल सोनी "फ़रहत"
ललितपुर उ प्र